## ताम्रयुग का परिचय (Introduction of Chalcolithic Age)

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास विभिन्न युगों में विभाजित किया गया है, जिनमें से ताम्रयुग (Chalcolithic Age) एक अत्यंत महत्वपूर्ण अवस्था है। यह युग मानव जीवन में उस परिवर्तनकारी दौर का प्रतीक है, जब मनुष्य ने पत्थर के औजारों से आगे बढ़कर धातुओं का उपयोग आरंभ किया। 'ताम्रयुग' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है — 'ताम्र' अर्थात 'तांबा' और 'युग' अर्थात 'काल'। इस प्रकार ताम्रयुग वह काल था जब तांबे के उपकरणों और औजारों का प्रयोग समाज में व्यापक रूप से होने लगा।

ताम्रयुग की विशेषता यह थी कि इस समय मानव ने धातु विज्ञान की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की। उसने तांबे को गलाकर विभिन्न आकारों में ढालने की कला सीखी। इससे उसके औजार पहले की अपेक्षा अधिक मजबूत और उपयोगी बन गए। खेती, शिकार, लकड़ी काटने, और अन्य दैनिक कार्यों में इन उपकरणों का उपयोग बढ़ने लगा। तांबे के औजारों के प्रयोग से कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई और समाज में स्थायी जीवन की नींव पड़ी।

भारत में ताम्रयुग की शुरुआत लगभग 3000 ईसा पूर्व के आसपास मानी जाती है। इस युग के प्रमुख स्थलों में राजस्थान का आहर, गिलुंड, बालाथल; महाराष्ट्र का जोरवे; मध्य प्रदेश का नवदातोली; गुजरात का लोटेश्वर तथा उत्तर प्रदेश का चंद्रौली प्रमुख हैं। इन स्थलों से तांबे के औजार, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, मनके और अन्न के दाने प्राप्त हुए हैं, जो इस युग की विकसित सामाजिक और आर्थिक स्थिति का प्रमाण देते हैं।

ताम्रयुगीन मानव ने न केवल धातु का प्रयोग किया, बल्कि मिट्टी के बर्तनों का निर्माण भी बड़े पैमाने पर किया। इन बर्तनों पर ज्यामितीय आकृतियों और रंगों की सजावट उस समय के कलात्मक बोध को दर्शाती है। ताम्रयुगीन बस्तियाँ प्रायः नदियों के किनारे बसाई गई थीं, जिससे जलस्रोतों की उपलब्धता बनी रहती थी। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि इस काल के लोग जल, भूमि और कृषि के संबंध को भली-भांति समझने लगे थे।

सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो ताम्रयुग में सामुदायिक जीवन का विकास हुआ। लोग समूहों में रहने लगे, व्यापार का विस्तार हुआ, और वस्तुओं के विनिमय की परंपरा आरंभ हुई। यह वह युग था जब मानव समाज धीरे-धीरे नगरीकरण की ओर अग्रसर हुआ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि ताम्रयुग मानव सभ्यता के विकास का संक्रमणकाल था, जिसने पत्थर युग और लौह युग के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य किया। इस युग में धातु प्रयोग, कृषि, कला, व्यापार और सामाजिक संगठन के प्रारंभिक स्वरूप विकसित हुए, जो आगे चलकर प्राचीन सभ्यताओं की आधारशिला बने। ताम्रयुग ने मानव जीवन में तकनीकी चेतना और सांस्कृतिक प्रगति के द्वार खोले, जिससे सभ्यता के विकास की दिशा स्थायी रूप से निर्धारित हुई।